पूरक पाठ्यपुस्तक : कृतिका भाग 2

माता का अँचल (शिवपूजन सहाय)

पाठ का सारांश

पिता के मस्त व्यक्तित्व का संकेत–संस्मरण रूप में प्रस्तुत पाठ 'माता का अँचल' शिवपूजन सहाय द्वारा रचित उपन्यास 'देहाती दुनिया' से यहाँ संकलित है। इसमें उपन्यासकार ने अपनी बाल्यावस्था का मोहक और नैसर्गिक वर्णन किया है। रचनाकार ने एक पद्य प्रस्तुत करते हुए कहा है कि जहाँ लड़कों का साथ होता है, वहाँ मृदंग बजता है अर्थात् मौज-मस्ती रहती है और जहाँ वृद्धजनों का संग रहता है, वहाँ खरचे के लिए हमेशा हाथ तंग बना रहता है। किंतु वृद्धों के इस लोक-प्रसंग के विपरीत लेखक ने अपने पिता के मौजी व्यक्तित्व को प्रकाशित करते हुए स्पष्ट किया है कि उनके पिता का साथ भी उनके लिए लड़कों के साथ जैसा मस्तीपूर्ण ही था।

पिता से अत्यधिक लगाव–रचनाकार के पिता प्रतिदिन जल्दी उठकर निबट-नहाकर पूजा करने बैठ जाते थे। रचनाकार को अपने पिता से बचपन से ही अत्यधिक प्रेम था। माँ से केवल दूध पीने तक का संबंध था। पिता के साथ ही वे बैठक में सोया करते। उनके साथ ही उठते, पिता नहलाते, साथ ही पूजा पर बिठा लेते। पूजा की भभूत पिताजी उनके माथे पर लगा देते।

भोलानाथ का परिचय–पिताजी बड़े प्यार से लेखक को 'भोलानाथ' कहते, जबकि उनका वास्तविक नाम 'तारकेश्वरनाथ' था। 'भोलानाथ' पिता को बाबू जी और माता को मइयाँ कहकर संबोधित करते थे।

पिता के साथ भोलानाथ का गंगा के किनारे मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाने के लिए जाना–जब बाबू जी रामायण पाठ करते, भोलानाथ आईने में अपना चेहरा देखा करते। पूजा-पाठ करने के बाद बाबू जी राम-राम लिखने लगते, अपनी एक 'रामनाम बही' पर हज़ार राम नाम लिखकर वह उसे पाठ करने की पोथी के साथ बाँधकर रख देते। पाँच सौ बार कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर राम नाम लिखकर आटे की गोलियों में लपेटते और उन गोलियों को लेकर गंगा जी की ओर चल पड़ते थे। भोलानाथ भी उनके कंधों पर बैठे रहते। जब वह गंगा में एक-एक करके आटे की गोलियाँ फेंककर मछलियों को खिलाने लगते, तब खूब आनंद आता। लौटते में पेड़ों की डालों पर भोलानाथ को बाबू जी झूला-झुलाते, कभी-कभी कुश्ती भी लड़ते। भोलानाथ बाबू जी को पछाड़ देते, वे पीठ के बल सीधे लेट जाते, भोलानाथ उनकी छाती पर बैठ उनकी लंबी-लंबी मूँछें उखाड़ने लगते, तब वह हँसते-हँसते भोलानाथ के हाथों को मूँछों से छुड़ाकर चूम लेते थे।

भोलानाथ के प्रति मइयाँ का स्नेह–उनके साथ हँसते-हँसते जब भोलानाथ घर आते, तब साथ ही चौके पर खाना खाने बैठते। बाबू जी अपने हाथ से फूल के एक कटोरे में गोरस और भात मिलाकर खिलाते थे। जब भोलानाथ का पेट भर जाता तो मइयाँ (माँ) थोड़ा और खिलाने के लिए हठ करती थीं। मइयाँ भी खुद और खिलाने बैठ जातीं। खाना खाने के बाद भोलानाथ नंग-धड़ंग रस्सी में बँधा हुआ काठ का घोड़ा लेकर बाहर गली में निकल जाते।

माँ का भोलानाथ को बलपूर्वक सजाना-सँवारना–जब कभी माँ भोलानाथ को अचानक पकड़ लेतीं, तब वे उनके सिर में सरसों का तेल डाल देतीं, नाभी और लिलार में काजल की बिंदी लगा चोटी गूँथती और उसमें फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन कुरता-टोपी पहना देती थीं। भोलानाथ पूरे कन्हैया बनकर रोते-सिसकते बाबू जी की गोद में बाहर आते थे। बाहर आते ही मित्रों का झुंड प्रतीक्षा करता मिलता, बाबू जी की गोद से उतर भोलानाथ लड़कों के झुंड में शामिल हो जाते। सभी मित्र तमाशे करने लगते।

भोलानाथ के विभिन्न खेल-तमाशे–तमाशे भी तरह-तरह के, चबूतरे पर मिठाई की दुकान लगाते, जिसमें ढेले के लड्डू, पत्तों की पूरी-कचौरियाँ होतीं, गीली मिट्टी की जलेबियाँ होतीं। थोड़ी देर में मिठाई की दुकान हटाकर घरौंदा बनाने लगते। कभी-कभी बरात का जुलूस भी निकालते। बरात में कनस्तर का तंबूरा बजता, आम के उगते पौधे को घिसकर शहनाई बनाई जाती। झूठमूठ खेती करने का भी नाटक होता। बाबू जी यह सब देख खूब प्रसन्न होते।

मूसन तिवारी को चिढ़ाने पर शिक्षक द्वारा पिटाई–बच्चे गाँव के लोगों को भी खूब चिढ़ाते। एक दिन लड़कों के झुंड को रास्ते में मूसन तिवारी मिल गए। बेचारे बूढ़े आदमी–उन्हें समझ कम आता था। बैजू उन्हें चिढ़ाने लगा–

"बुढ़वा बेईमान माँगे करैला का चोखा।"

भोलानाथ और उनके मित्र भी सुर-में-सुर मिलाकर यही चिल्लाने लगे। मूसन तिवारी ने सबको दूर तक भगाया। सभी लड़के बेतहाशा भाग चले। जब भोलानाथ और उनके मित्र न मिल सके, तब तिवारी जी सीधे पाठशाला में चले गए। वहाँ से भोलानाथ और बैजू को पकड़ लाने के लिए चार लड़के भेजे गए। इधर ज्यों ही भोलानाथ घर पहुँचे, त्यों ही गुरु जी के सिपाही उन पर टूट पड़े। वहाँ बैजू भी था। बैजू तो नौ-दो ग्यारह हो गया; भोलानाथ पकड़े गए। फिर तो गुरु जी ने भोलानाथ की खूब खबर ली।

पाठशाला से छुट्टी तथा साथियों के संग खेल और शरारत–बाबू जी ने यह हाल सुना। वह दौड़े हुए पाठशाला में आए। गोद में उठाकर भोलानाथ को पुचकारने और फुसलाने लगे, परंतु भोलानाथ दुलारने से चुप होने वाले लड़के नहीं थे। रोते-रोते बाबू जी का कंधा आँसुओं से तर कर दिया। वह गुरु जी की चिरौरी करके भोलानाथ को घर ले चले। रास्ते में फिर भोलानाथ के साथी लड़कों का झुंड मिला। वे ज़ोर से नाचते और गाते थे–

"माई पकाई गरर-गरर पूआ, हम खाइब पूआ, ना खेलब जुआ।"

फिर क्या था, भोलानाथ रोना-धोना भूल गए। हठ करके बाबू जी की गोद से उतर पड़े और लड़कों की मंडली में मिलकर लगे वही तान-सुर अलापने। तब तक सब लड़के सामने वाले मकई के खेत में दौड़ पड़े। उसमें चिड़ियों का झुंड चुग रहा था। वे दौड़-दौड़कर उन्हें पकड़ने लगे, परंतु एक भी हाथ न आई। भोलानाथ खेत से अलग ही खड़े होकर गा रहे थे–

"राम जी की चिरई, राम जी का खेत, खा लो चिरई, भर-भर पेट।"

भोलानाथ से कुछ दूर बाबू जी और उनके गाँव के कई आदमी खड़े होकर यह तमाशा देख रहे थे और यही कहकर हँसते थे कि 'चिड़िया की जान जाए, लड़कों का खिलौना'। सचमुच 'लड़के और बंदर पराई पीर नहीं समझते।'

साँप का निकलना और भोलानाथ का गिरकर घायल होना–एक टीले पर जाकर भोलानाथ और उनके मित्र चूहों के बिल में पानी उलीचने लगे। नीचे से ऊपर पानी फेंकना था। सब थक गए। तब तक गणेश जी के चूहे की रक्षा के लिए शिव जी का साँप निकल आया। रोते-चिल्लाते भोलानाथ और उनके मित्र बेतहाशा भाग चले! कोई औंधा गिरा, कोई चारों खाने चित। किसी का सिर फूटा, किसी के दाँत टूटे। सभी गिरते-पड़ते भागे। भोलानाथ की सारी देह लहूलुहान हो गई। पैरों के तलवे काँटों से छलनी हो गए।

डरकर माँ की शरण में जाना–भोलानाथ एक सुर से दौड़ते हुए आए और घर में घुस गए। उस समय बाबू जी बैठक के बरामदे में बैठकर हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। उन्होंने भोलानाथ को बहुत पुकारा, पर उनकी अनसुनी करके वे दौड़ते हुए माता के पास ही चले गए। जाकर माँ की गोद में ही शरण ली।

भोलानाथ को भयभीत देख माँ का रो पड़ना–'मइयाँ' चावल साफ़ कर रही थी। भोलानाथ उसी के आँचल में छिप गए। भोलानाथ को डर से काँपते देखकर माँ भी ज़ोर से रो पड़ी और सब काम छोड़ बैठी। अधीर होकर भोलानाथ से भय का कारण पूछने लगी।

भोलानाथ का उपचार और सांत्वना–झटपट हल्दी पीसकर भोलानाथ के घावों पर लगाई गई। घर में कुहराम मच गया। भोलानाथ केवल धीमे सुर से ''साँ·······स·······साँ'' कहते हुए माँ के आँचल में लुके चले जाते थे। सारा शरीर थर-थर काँप रहा था। रोंगटे खड़े हो गए थे। भोलानाथ आँखें खोलना चाहते थे; पर वे खुलती न थीं। उनके काँपते हुए ओठों को माँ बार-बार निहारकर रोती और बड़े लाड़ से उन्हें गले लगा लेती थी।

भोलानाथ का पिता के पास न जाना–इसी समय बाबू जी दौड़े आए। आकर झट भोलानाथ को माँ की गोद से अपनी गोद में लेने लगे। पर भोलानाथ ने माँ के आँचल की–प्रेम और शांति के चँदोवे की–छाया न छोड़ी·······।

शक्ति-प्रदाता माँ का स्नेह–इस प्रकार उपर्युक्त संस्मरण माँ-पिता और पुत्र के प्रेम को प्रकट करता है। पिता से अधिक प्यार होने पर भी भोलानाथ को उस समय माँ का आँचल ही प्यारा लगा; क्योंकि माँ शरण देने वाली होती है और उसका स्नेह सभी विपदाओं से जूझने की शक्ति प्रदान करता है।

शब्दार्थ

मृदंग = एक प्रकार का वाद्य-यंत्र। **तड़के** = प्रातः, सवेरे। **विक करना** = परेशान करना। **लिलार** = ललाट। **मइयाँ** = माँ। **आइना** = दर्पण। **निहारा करते** = देखा करते। **उतान** = पीठ के बल लेटना। **गोरस** = दूध, दही, मट्ठा, छाछ। **सानकर** = मिलाकर। **अफरना** = भर पेट से अधिक खा लेना और पेट का गैस से फूलना। **ठौर** = स्थान। **मरदुए** = मर्द, पुरुष। **महतारी** = माता। **कड़वा तेल** = सरसों का तेल। **बोथकर** = सराबोर करके। **चँदोआ** = छोटा शामियाना। **खोंचे** = खोमचा। **बटखरा** = तौलने का मान, बाँट। **पिसान** = अन्न का पिसा बारीक चूर्ण, आटा। **ज्योनार** = भोज, दावत। **जीमने** = भोजन करने। **अमोले** = आम का उगता हुआ पौधा। **कुल्हिए** = छोटा कुल्हड़। **ओहार** = परदे के लिए लगाया गया कपड़ा। **कियारी** = क्यारी। **कसोरा** = मिट्टी का बना छिछला कटोरा। **बटोही** = राहगीर। **रहरी** = अरहर। **मेहरी** = पत्नी। **मेघ** = बादल। **पइसा** = पैसा। **बिलाई** = लकड़ी या लोहे की सिटकनी; जो किवाड़ों को बंद करने के लिए लगाई जाती है। **बरखा** = वर्षा। **अँठई** = कुत्ते के शरीर में चिपके रहनेवाले छोटे कीड़े, किलनी। **चिरौरी** = दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना, विनती। **खेलब** = खेलना। **हठ** = जिद। **मकई** = मक्का। **चिरई** = चिड़िया। **देह** = शरीर। **ओसारे** = बरामदा। **अमनिया** = साफ, शुद्ध। **लुके** = छिपे।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : 'माता का अँचल' पाठ में माँ के प्रति अत्यधिक लगाव न होते हुए भी भोलानाथ माँ के आँचल में ही प्रेम और शांति पाता है। इसका आप क्या कारण मानते हैं?

उत्तर: बच्चे भोलानाथ का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। इसका कारण यह है कि माता के अँचल की छाँव में बच्चे स्वयं को अधिक सुरक्षित अनुभव करते हैं; क्योंकि बच्चे यह बात भली-भाँति जानते हैं कि माँ उनकी भावनाओं, आवश्यकताओं और दुःख को कहीं अधिक जानती-समझती है और वह उनके प्रति गंभीर भी होती है। पाठ के ही उदाहरण से इसे समझा जा सकता है। बालक भोलानाथ साँप से अत्यधिक भयभीत होकर गिरता-पड़ता लहूलुहान होकर माँ के आँचल में जाकर रोने लगता है। भय के कारण न उसकी आँखें खुलती हैं और न होठों का कंपन ही रुकता है। बालक की इस दशा को देखकर मइयाँ अपनी रुलाई नहीं रोक पाती। वह बार-बार भोलानाथ को निहारकर रोती और बड़े लाड़ से उसे गले लगा लेती, जबकि पिता पर इसकी कोई विशेष प्रतिक्रिया न हुई। वे दौड़े-दौड़े आए अवश्य और उसे अपनी गोद में लेने का प्रयत्न भी किया, किंतु भावनात्मक रूप में वे उसे आश्वासन न दे सके कि उसके दुःख, भय की तीव्रता का अनुभव उनको है, जबकि माता के आँसुओं ने बालक को आश्वस्त कर दिया कि एकमात्र वही उसके दुःख को समझती है और वही उस दुःख में उसकी भागीदार भी है।

प्रश्न 2 : 'माता का अँचल' पाठ में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर: तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति और आज की ग्रामीण संस्कृति में आमूल-चूल परिवर्तन हो गया है। पूजा-पाठ के संदर्भ में पहले लोग सूर्योदय से पहले उठते थे और नहा-धोकर पूजा करते थे, रामायण का पाठ करते थे। आज यह परिदृश्य बदल गया है। लोग सुबह देर से उठते हैं, पूजा-पाठ से लोगों का बहुत सरोकार नहीं रह गया है। रामायण पाठ करना तो दूर की बात, घरों में रामायण नहीं मिलती है। पुरुष प्रायः बड़ी रौबदार मूँछें और सिर पर मोटी चोटी रखते थे, अब मूँछें और चोटी रखने का चलन समाप्तप्राय हो गया है। सिर में लोग सरसों का तेल लगाया करते थे, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम हुआ करता था, अब पहले तो लोग सिर में तेल लगाते ही नहीं और लगाते भी हैं तो तरह-तरह के खुशबूदार तेल। भोजन में गोरस की प्रधानता थी, आज फास्ट-फूड का चलन बढ़ गया है। मनोरंजन और खेल-खिलौनों में नौटंकी, तमाशे, घरौंदे बनाना, दुकान सजाना, बरात के जुलूस निकालना आदि प्रमुख था। बरात में पालकी आकर्षण का केंद्र हुआ करती थी। अब मनोरंजन में रेडियो, टी०वी० आदि का बोलबाला हो गया है। घरौंदा जैसे शब्दों का अर्थ तक बच्चों को मालूम नहीं हैं। बरात में पालकी का स्थान सजी-धजी मोटरगाड़ियों ने ले लिया है। बच्चों के खेलों में लोकगीतों और लोकसंगीत का बाहुल्य था, आज यह सब ग्राम्य संस्कृति से जैसे लुप्त हो गए हैं। चोट आदि लगने पर प्राथमिक उपचार के रूप में हल्दी आदि घरेलू नुस्खों का प्रयोग किया जाता है, आज बात डिटॉल से आरंभ होकर डॉक्टरी पट्टी पर जाकर समाप्त होती है।

प्रश्न 3 : 'माता का अँचल' पाठ में भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर: जब भोलानाथ की मैया उसे बलपूर्वक नहलाती है और उसके सिर में तेल लगाती है तो वह बहुत रोता है। उसके पिता उसे गोद में लेकर घर से बाहर ले जाते हैं, वहाँ भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है। इसी प्रकार जब पाठशाला में गुरु जी द्वारा मार खाकर वह बहुत रोता है, तो पिता जी उसे घर ले आते हैं। रास्ते में वह अपने साथियों को देखता है, जो चिड़ियों के झुंड से खेल रहे होते हैं। उन्हें देखकर भोलानाथ रोना-सिसकना भूलकर उनके साथ खेलने लगता है। इसका कारण बच्चे की स्वाभाविक बालमनोवृत्ति है। बच्चे को अपने खेल-खिलौने और साथी बहुत प्रिय होते हैं। उनके बीच में वह अपना सारा दुःख-दर्द भूल जाता है। यही

कारण है कि अपने साथियों को देखकर भोलानाथ सिसकना भूल जाता है।

प्रश्न 4 : भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से कैसे भिन्न है?

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेल आज के खेलों से बिलकुल अलग हैं। आज गाँवों और नगरों में रहने वाले बालक क्रिकेट, खो-खो, हॉकी, शतरंज, लूडो, साँप-सीढ़ी आदि खेलते हैं। हम लोग भी इन्हीं आधुनिक खेल-खिलौनों से खेलते हैं। हम लोग पार्क में जाते हैं, वहाँ हम फुटबॉल खेलते हैं, रस्सी कूदते हैं, विभिन्न प्रकार के झूलों पर झूलते हैं, बार पर कसरत करते हैं, बैडमिंटन खेलते हैं और स्केटिंग भी करते हैं। संभवतया जिस काल का चित्रण रचनाकार ने किया है, उस समय ये खेल न हों या भोलानाथ के ग्रामीण परिवेश में ये न हों।

इसी प्रकार भोलानाथ की खेल-सामग्री मिट्टी, वृक्षों की टहनियाँ या घर में प्रयुक्त किया जाने वाला सामान होता था, जबकि आजकल तो उत्कृष्ट खेल-सामग्री बाज़ार में उपलब्ध है। हाँ, ग्राम्य परिवेश के मज़दूर-किसान वर्ग के बच्चों के खेल-खिलौने आज भी भोलानाथ के खेल-खिलौनों की भाँति परंपरागत ही हैं। उनके खेल भी गाँव के रीति-रिवाज़ और व्यवसाय हैं; जैसे—शादी-विवाह, खेती-बाड़ी और हाट-बाज़ार आदि।

प्रश्न 5 : बच्चों द्वारा बरात कैसे निकाली जाती थी? उनके द्वारा सजाई गई बरात तथा शादी के कार्यक्रम का वर्णन करते हुए 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बताइए कि बाबू जी उनके इस कार्यक्रम में किस तरह सम्मिलित होते थे? छोटों के प्रति बाबू जी के प्रेम के इस उदाहरण से आप क्या प्रेरणा ग्रहण करते हैं? ***(CBSE 2015, 16)***

उत्तर : बच्चे कनस्तर का तंबूरा बजाकर, अमोले को घिसकर बनाई गई शहनाई बजाकर व टूटी चूहेदानी की पालकी बनाकर बरात निकालते। बच्चे स्वयं समधी बनकर बकरे पर चढ़कर चबूतरे के एक कोने से दूसरे कोने तक जाते। आँगन तक जाकर बरात फिर लौट आती थी। लौटते समय खटोली पर लाल कपड़ा डालकर उसमें दुलहिन को चढ़ा लिया जाता था। लौट आने पर बाबू जी भी इस कार्यक्रम में शामिल होते थे। वह जैसे ही लाल कपड़ा उठाकर दुलहिन का मुख निहारने लगते, तब सभी बच्चे हँसकर भाग जाते थे। बाबू जी का यह व्यवहार छोटों के प्रति उनके प्रेम और असीम वात्सल्य को दर्शाता है। उनका यह प्रेम हमें छोटों के साथ घुल-मिलकर उनकी खुशियों को बाँटने की प्रेरणा देता है।

प्रश्न 6 : पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए, जो आपके दिल को छू गए हों।

उत्तर : पाठ में आए दिल को छू देने वाले निम्नलिखित प्रसंग उल्लेखनीय हैं—

(i) बालक भोलानाथ का पिता से कुश्ती लड़ना, पिता का कुश्ती हार जाना; बालक का पिता को खट्टा और मीठा चुम्मा देना, पिता का बालक को चुम्मा लेते समय दाढ़ी-मूँछ चुभा देना और बालक का झुँझलाकर उनकी मूँछें नोचने लगना।

(ii) मइयाँ का बालक भोलानाथ को पकड़कर उसके सिर में चुल्लूभर कड़वा तेल डाल देना, बालक का रोने लगना, पिता के बिगड़ने पर उसे न छोड़ना। मइयाँ का नाभी और माथे पर काजल की बिंदी लगाना, चोटी गूँथना, उसमें फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन कुरता-टोपी पहनाकर 'कन्हैया' बनाकर छोड़ना। बालक का रोते-सिसकते पिता के पास जाना।

(iii) बालक भोलानाथ का अपने साथियों के साथ मिठाई की दुकान सजाने, घरौंदे बनाने, दावत करने, बरात के जुलूस निकालने, दूल्हे-दुलहिन का ब्याह रचाने, खेती करने, फ़सल काटने-बोने के खेल खेलना।

(iv) एक दिन आँधी के साथ मूसलाधार वर्षा आने, वर्षा रुक जाने पर बहुत-से बिच्छू निकलने और बच्चों के वहाँ से डरकर भागने तथा रास्ते में मिले मूसन तिवारी को चिढ़ाने का प्रसंग।

(v) चूहे के बिल से साँप के निकलने पर सभी के भाग खड़े होने और डरकर बेतहाशा भागने से घायल बालक भोलानाथ का लहूलुहान अवस्था में पिता को छोड़कर सीधे माँ के आँचल में छिपने और बालक को रोते देखकर माँ के रोने लगने का प्रसंग।

प्रश्न 7 : 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बताएँ कि माँ किस प्रकार भोलानाथ को कन्हैया बनाती थी और किस युक्ति से खाना खिलाती थी?

उत्तर : माँ भोलानाथ को जबरदस्ती पकड़कर पहले नहलातीं, फिर उसके सिर में बहुत सारा कड़वा तेल डालकर चोटी गूँथतीं और उसमें फूलदार लट्टू बाँधती थीं। उसे कन्हैया की तरह ही रंगीन कुर्ता-टोपी पहनाकर काजल की बिंदी लगा देती थीं। इस प्रकार वे उसे कन्हैया बना देती थीं। भोलानाथ अपने पिता के साथ भोजन करके तृप्त हो जाता था, लेकिन माँ को संतुष्टि नहीं होती थी। वे फिर से उसे खिलाने की जिद करतीं। दही-भात सानकर चिड़ियों, कबूतर, मैना, तोता, हंस आदि के नाम से उसके ग्रास बनातीं और भोलानाथ से कहतीं कि जल्दी से खा लो, वरना ये सब उड़ जाएँगे। लेखक उनके बहकावे में आ जाता और पेट भरा होने पर भी बहुत-सा खाना खा जाता था। इस युक्ति से माँ उसे खाना खिलाती थीं।

प्रश्न 8 : बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं? अपने जीवन से संबंधित कोई घटना लिखिए, जिसमें आपने अपने माता-पिता के प्रति प्रेम अभिव्यक्त किया हो।

उत्तर : बच्चे हठपूर्वक अपनी बात मनवाकर, माता-पिता को प्यार कर, उन्हें खट्टा-मीठा चुम्मा देकर, उनके साथ विविध प्रकार के खेल खेलकर, उनके पूजा-पाठ आदि कार्यों का अनुकरण करके, झूठा बहाना बनाकर परेशान करके और इसी प्रकार की अन्य गतिविधियों के माध्यम से माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं।

छात्रावास में रहते हुए एक बार मैं ज्वर से पीड़ित हो गया। यद्यपि वार्डन ने मुझे दवाई दिलवा दी थी और वे मेरी अच्छी देखभाल भी कर रहे थे, लेकिन मुझे माता-पिता की बहुत याद आ रही थी। मैंने उनसे माता-पिता को बुला देने की प्रार्थना की। उन्होंने मेरे माता-पिता को फ़ोन कर दिया। सूचना पाते ही मेरे माता-पिता छात्रावास आ गए। जब वे मेरे कक्ष में पहुँचे तो मैं भावुक होकर माँ से लिपट गया। माँ ने मुझे अपनी गोद में भर लिया। उनकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई थी। वे बार-बार मेरा माथा चूम रही थीं। उनके वात्सल्य की औषधि से मेरा ज्वर पलभर में छूमंतर हो गया और मैं स्वयं को स्वस्थ महसूस करने लगा।

प्रश्न 9 : 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

अथवा 'माता का अँचल' पाठ में वर्णित बचपन और आज के बचपन में क्या अंतर है? क्या इस अंतर का प्रभाव दोनों बचपनों के जीवन-मूल्यों पर पड़ा है? तर्क सहित स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE SQP 2021)***

अथवा **'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की दिनचर्या आजकल के बच्चों की दिनचर्या से भिन्न है, कैसे? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह बहुत स्वच्छंद, मस्त और निराली है। यह ग्रामीण बच्चों की दुनिया है। बच्चे माता-पिता के साथ खेलते-खाते और घूमते हैं। उन पर पढ़ाई-लिखाई का कोई दबाव नहीं है। वे सारा दिन खेतों और बागों में मित्रों के साथ खेलते और मस्ती करते हैं। चिड़ियाँ उड़ाना, उनके पीछे दौड़ना, आते-जाते लोगों को छेड़ना, चूहे के बिल में पानी भरना, वर्षा में भीगना आदि उनकी प्रतिदिन की शरारतें हैं। यद्यपि उनके पास खेल की सामग्री के नाम पर धूल, ठीकरे, मिट्टी के टूटे-फूटे बरतन, कंकड़, पत्थर, चूहेदानी आदि ही हैं, लेकिन वे इन्हीं से खेल का आनंद ले लेते हैं।

हमारे बचपन की दुनिया इससे भिन्न है। व्यस्त होने के कारण हमारे माता-पिता के पास हमारे साथ खेलने-खाने का समय नहीं है। हमारे ऊपर पढ़ाई-लिखाई का बोझ है। हमें घर से दूर जाकर खेलने की स्वतंत्रता नहीं है। हमारी दुनिया टी०वी०, इंटरनेट, मोबाइल, कोल्डड्रिंक्स, पिज्जा, बर्गर, चॉकलेट आदि के इर्द-गिर्द ही घूमती है। बचपन की स्वतंत्रता, स्वच्छंदता और मस्ती हमें नसीब नहीं है।

प्रश्न 10 : ''माता के अँचल में जो सुकून मिलता है और कहीं नहीं।'' कथन के संदर्भ में उदाहरण सहित अपने विचार लिखिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'माता के अँचल में जो सुकून मिलता है और कहीं नहीं'–यह कथन पूर्णतः सत्य है। 'माता का अँचल' पाठ में भोलानाथ साँप से डरकर गिरता-पड़ता भागता है। जब वह घर पहुँचता है तो पिता दालान में ही बैठे थे। वह पिता के पास नहीं जाता, बल्कि सीधा माँ के पास जाता है और उसके आँचल में छिप जाता है। माँ के आँचल में वह स्वयं को सुखी और सुरक्षित महसूस करता है। माँ के आँचल में वह अपना सारा भय और दुख-दर्द भूल जाता है।

प्रश्न 11 : 'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर : प्रस्तुत पाठ का शीर्षक 'माता का अँचल' बिलकुल सार्थक और उपयुक्त है; क्योंकि इसमें बच्चे के लिए माँ के आँचल की महत्ता बताई गई है। पाठ में दिखाया गया है कि यद्यपि बच्चे भोलानाथ का जुड़ाव पिता के साथ अधिक था। वह उन्हीं के साथ खाता-खेलता और घूमता था, लेकिन जब उस पर विपत्ति आती है तो वह माँ के आँचल की ही शरण लेता है। पाठ के अंत में दी गई साँप की घटना शीर्षक की सार्थकता को पूर्णतः स्पष्ट कर देती है। साँप से भयभीत होकर जब भोलानाथ रोता-चिल्लाता घर आता है तो सीधा माँ के आँचल में ही जाकर शरण लेता है और पिता के बुलाने पर भी उनके पास नहीं जाता। माँ के आँचल में ही उसे सुख, शांति और सुरक्षा का अहसास होता है। बच्चे के दुःख को देखकर उस समय जो तड़प और व्याकुलता माँ के अंदर दिखती है वैसी पिता के अंदर दिखाई नहीं देती।

इस पाठ का अन्य शीर्षक हो सकता है–'माँ की ममता', 'आँचल की छाँव', 'बचपन की दुनिया' आदि।

प्रश्न 12 : 'माता का अँचल' पाठ में माता-पिता का बच्चों के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पाठ 'माता का अँचल' वात्सल्य भाव पर आधारित पाठ है। बालक भोलानाथ का अपने पिता से बहुत लगाव था। भोलानाथ अपने पिता को बाबू जी कहते थे। बाबू जी भी भोलानाथ को जी-जान से प्यार करते थे। भोलानाथ के प्रत्येक खेल में वे भोलानाथ का उत्साह बढ़ाते थे। ये सब बातें पिता-पुत्र के प्रेम-वात्सल्य का अनुपम उदाहरण हैं। इसी प्रकार भोलानाथ की माँ भी उनसे बहुत प्रेम करती थीं। वे उन्हें खूब दुलारतीं, खूब भोजन करातीं। साँप के भय से जब वे माँ के आँचल में छिप गए, तब उन्हें माँ ने बहुत दुलारा, जिससे उनका भय जाता रहा। ये सब बातें माता-पुत्र के वात्सल्य का अद्वितीय उदाहरण हैं।

प्रश्न 13 : 'माता का अँचल' पाठ में बाल-सुलभ भोलेपन और सरलता को कैसे चित्रित किया गया है? दो उदाहरण दीजिए।

अथवा **'माता का अँचल' पाठ में आपको बाल स्वभाव की कौन-सी जानकारी मिलती है?**

उत्तर : 'माता का अँचल' पाठ में बाल-सुलभ भोलेपन और सरलता का यथार्थ चित्रण किया गया है; उसके मुख्य उदाहरण इस प्रकार हैं–

(i) बालक भोलानाथ कितना भी रो रहा हो, अपने साथियों को खेलता देखकर सिसकना भूल उनके साथ खेलने लग जाता था।

(ii) भोलानाथ एवं उसके मित्रों के खेल भी सरल और भोलेपन से पूर्ण थे; जैसे–मिट्टी की मिठाइयाँ बनाना, घरौंदा बनाना, खेती करने के खेल खेलना तथा बरात के जुलूस में कनस्तर का तंबूरा बजाना आदि। ये सब खेल उसके बाल-सुलभ, भोलेपन और सरलता के ही परिचायक हैं।

(iii) भोलानाथ और उसकी मित्र-मंडली की शरारतें भी उसके भोलेपन और सरलता की प्रतीक थीं। उसकी कुछ शरारतें थीं–मूसन तिवारी को चिढ़ाना, चूहे के बिल में पानी डालना आदि।

प्रश्न 14 : भोलानाथ के खाने के समय माता-पिता में नोंक-झोंक होती थी। आपको भी अपने बचपन का समय याद आता होगा, जब घर में माता-पिता के बीच नोंक-झोंक होती थी। ऐसे कुछ आप-बीते प्रसंगों का वर्णन कीजिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : जिस प्रकार भोलानाथ के माता-पिता के बीच नोंक-झोंक होती थी, वैसी ही हमारे बचपन में भी माता-पिता के बीच नोंक-झोंक होती थी। पिता जी किसी कारण हमें डाँटते तो माँ हमारा ही पक्ष लेती थीं और माँ डाँटतीं तो पिता जी हमें प्यार करते। हमारी गलतियों और शैतानियों के लिए दोनों एक-दूसरे को ज़िम्मेदार मानते, किंतु कोई भी अपनी ज़िम्मेदारी न स्वीकार करता, इसी ज़िम्मेदारी के निर्धारण में कभी-कभी उनकी नोंक-झोंक विवाद तक पहुँच जाती।

प्रश्न 15 : भोलानाथ की मइयाँ उसे थोड़ा और खिलाने की हठ क्यों करती थी? वह उसके बाबू जी को क्या कहती थी? इससे माँ की कैसी छवि बनती है?

अथवा **पिता द्वारा भोलानाथ को खाना खिलाने के बाद भी उसकी माँ उसे खाना खिलाती थी, क्यों? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर लिखिए।** ***(CBSE 2022 Term-2)***

उत्तर : भोलानाथ के भरपेट खाना खाने के बाद भी उसकी माँ उसको थोड़ा और खिलाने की हठ करती थी। वह उसके बाबू जी को कहती थी कि आप तो चार-चार दाने के कौर बच्चे के मुँह में देते जाते हो, इससे वह थोड़ा खाने पर भी यह समझ लेता है कि बहुत खा चुका। आप खिलाने का ढंग नहीं जानते।

बच्चे को भर-मुँह कौर खिलाना चाहिए। माँ के हाथ से खाने पर बच्चों का पेट भी भरता है। माँ के इस व्यवहार से स्पष्ट होता है कि वह अपने बच्चों के प्रति अत्यधिक ममत्व (ममता) रखती है और यह चाहती है कि उसके बच्चे अधिक-से-अधिक खाएँ और मानसिक एवं शारीरिक रूप से शक्तिशाली एवं ऊर्जावान् बनें। इससे माँ की स्नेहमयी छवि बनती है।

प्रश्न 16 : 'फसल' को काटने के बाद उसे बाल-मंडली किस प्रकार ओसाती थी? बाद में बाबू जी आकर क्या प्रश्न करते थे? इस प्रश्न में निहित भाव को स्पष्ट करते हुए बताइए कि उस युग की बाल-मंडली द्वारा खेले जाने वाले खेलों में कौन-सी महत्त्वपूर्ण बात छिपी होती थीं? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : 'फसल' को काटने के बाद बाल-मंडली उसे एक जगह पर रखकर पैरों से रौंद डालती थी। इसके बाद बच्चे कसोरे (मिट्टी का कटोरा) का सूप बनाकर फसल ओसाते अर्थात् अनाज को हवा में उड़ाकर दाने को भूसे से अलग करते और मिट्टी के दीये के तराजू बनाकर उसे तौलकर राशि तैयार कर देते थे। इसी बीच बाबू जी आकर प्रश्न करते—"इस साल की खेती कैसी रही भोलानाथ?" बाबू जी के आते ही सारे बच्चे उनके प्रश्न का उत्तर दिए बिना खेत-खलिहान छोड़कर भाग खड़े होते थे।

प्रस्तुत पाठ में वर्णित बाल-मंडली द्वारा खेले जाने वाले खेलों में उस युग की छवि स्पष्ट नज़र आती है। उस समय बच्चों के खेल अपने बड़ों के क्रियाकलापों से प्रेरित होते थे और अधिकांश खेल सामूहिक रूप से खेले जाते थे। इससे बच्चे खेल-खेल में जीवनोपयोगी अनेक बातों के व्यावहारिक पक्ष से परिचित हो जाते थे। इसके अतिरिक्त माता-पिता या अन्य व्यक्ति भी बच्चों के इस खेल का हिस्सा बन जाते थे। इससे बड़ों और बच्चों के मध्य आत्मीय एवं घनिष्ठ संबंध स्थापित हो जाते थे, जिसका वर्तमान युग में नितांत अभाव है।

प्रश्न 17 : 'माता का प्रेम, पिता के प्रेम की अपेक्षा अधिक गहन होता है।' 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर विचार कीजिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : 'माता का प्रेम पिता के प्रेम की अपेक्षा अधिक गहन होता है।' यह बात सत्य है। 'माता का अँचल' पाठ में भोलानाथ पिता के साथ अधिक रहता है। वह उन्हीं के साथ खेलता और खाता है; लेकिन विपदा के समय वह माता के आँचल में ही जाकर छिपता है। जब वह साँप से भयभीत होकर गिरता-पड़ता घर आता है तो पिता के बुलाने पर भी उनके पास नहीं जाता। वह रोता-बिलखता जाकर माता के आँचल में छिप जाता है। जब माँ उसे प्यार से दुलारती है तो उसका सारा भय दूर हो जाता है। माँ के आँचल में भोलानाथ को अधिक अपनापन और सुरक्षा महसूस होती है। अतः हम कह सकते हैं कि माता का प्रेम, पिता के प्रेम से अधिक गहन होता है।

प्रश्न 18 : 'माता का अँचल' पाठ में लेखक का अपने माता-पिता से बहुत लगाव है, माता-पिता भी उसका बहुत ध्यान रखते हैं। आपके विचार से लेखक को अपने माता-पिता के लिए क्या-क्या करना चाहिए? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : 'माता का अँचल' पाठ में लेखक का अपने माता-पिता से बहुत गहरा लगाव दिखाया गया है। वह पिता के साथ खाता-खेलता है। उनके कंधों पर बैठकर घूमता है, उनसे कुश्ती भी लड़ता है। माता उसके लिए खाना बनाती है, उसे नहलाती और उसे नज़र का टीका लगाती है। वह उसे तरह-तरह का लालच देकर पेटभर खाना खिलाती है। जब लेखक साँप से डरकर भागता है और घायल हो जाता है तो माँ उसे अपने आँचल में छिपा लेती है और उसका दुःख दूर करती है। इस प्रकार लेखक को माता-पिता से लगाव है और माता-पिता भी उसका बहुत ध्यान रखते हैं।

हमारे विचार से लेखक का माता-पिता के प्रति यह कर्तव्य है कि वह उनका कहना माने, उनकी सेवा करे और कोई ऐसा काम न करे, जिससे उन्हें अपमानित होना पड़े।

प्रश्न 19 : मूसन तिवारी द्वारा बाल-मंडली की शिकायत के बाद पाठशाला में भोलानाथ के साथ कैसा व्यवहार हुआ और पिता जी द्वारा उसे कैसे घर लाया गया? इस घटना से बच्चों की किस मनोवृत्ति का पता चलता है? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : मूसन तिवारी ने जब बाल-मंडली की शिकायत पाठशाला में जाकर गुरु जी से की तो गुरु जी ने चार लड़कों को भोलानाथ और बैजू को पकड़कर लाने के लिए भेजा। बैजू तो बचकर भाग गया, लेकिन भोलानाथ को पकड़कर वे लड़के पाठशाला ले आए। वहाँ गुरु जी ने उसकी खूब खबर ली। भोलानाथ का रोते-रोते बुरा हाल हो गया। जब पिता जी को इस बात का पता चला तो वे दौड़े-दौड़े पाठशाला गए और गोद में उठाकर उसे पुचकारने और फुसलाने लगे। इसके बाद उन्होंने गुरु जी से विनती की और उसे लेकर घर के लिए चले। इस घटना से हमें बच्चों की मनोवृत्ति के बारे में पता चलता है कि बच्चे अबोध और बहुत नटखट होते हैं। खेल में वे सबकुछ भूल जाते हैं। अपने साथियों की संगति में वे मनमानी करने लगते हैं और साथियों का अनुकरण करते हैं। इसी को बचपना कहते हैं। यही बाल मनोवृत्ति है।

प्रश्न 20 : बच्चे रोना-धोना पीड़ा, आपसी झगड़े ज़्यादा देर तक अपने साथ नहीं रख सकते हैं। 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2020)***

उत्तर : बच्चे दुःख-सुख की किसी बात को अधिक देर साथ नहीं रख सकते, क्योंकि उनका मन बहुत चंचल होता है। वे किसी बात को अधिक देर मन से लगाकर नहीं रख सकते। पाठ के आधार पर यह बात सिद्ध होती है। बालक भोलानाथ को जब उसकी माता जबरदस्ती पकड़कर नहलाती है और सिर में तेल लगाती है तो वह बुरी तरह रोने लगता है। उसके पिता उसे गोद में उठाकर बाहर ले जाते हैं। वहाँ अपने साथियों को देखकर वह रोना-धोना भूल जाता है और उनके साथ खेल में मस्त हो जाता है। इसी प्रकार विद्यालय में अध्यापक के डाँटने पर जब वह रोने लगता है और पिता के समझाने पर भी चुप नहीं होता तो वे उसे लेकर घर की ओर चल पड़ते हैं। रास्ते में कुछ बच्चे खेत में चिड़ियों के साथ खेल रहे थे। उन्हें देखकर वह रोना भूल जाता है और बच्चों के साथ खेल में व्यस्त हो जाता है।